"यूनियन"

पतंग की उड़ान

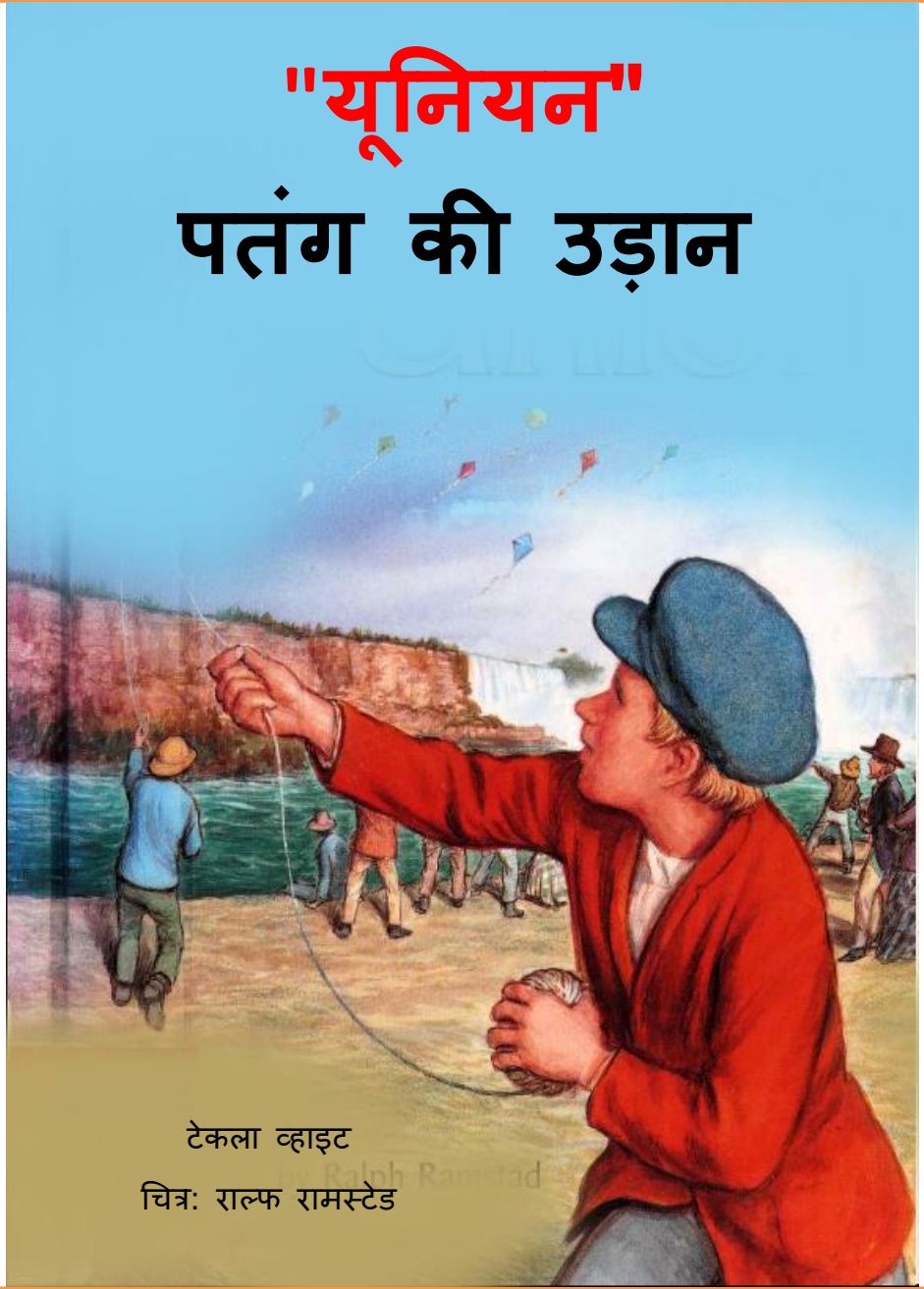

टेकला व्हाइट

चित्र: राल्फ रामस्टेड

"यूनियन"

पतंग की उड़ान

टेकला व्हाइट

चित्र: राल्फ रामस्टेड

नियाग्रा फॉल्स, न्यूयॉर्क
मार्च 1847

होमन ने धीरे-धीरे अपनी पतंग की डोर को ढील दी.

हफ्तों तक उसने एक मजबूत पतंग बनाने के लिए मेहनत की थी.

अब उसने उसे ध्यान से देखा.

वो अब तक की उसकी बनाई सबसे अच्छी पतंग थी.

उसे उम्मीद थी कि वो पतंग प्रतियोगिता जीतने के लिए काफी मजबूत होगी.

पुरस्कार पूरे पाँच डॉलर का था!

होमन ने इतना पैसा पहले कभी नहीं देखा था.

होमन ने पूरे शहर में पुल-प्रतियोगिता के पोस्टर देखे थे.

वो जानता था कि संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा के लोग, एक देश से दूसरे देश को जोड़ने के लिए नियाग्रा नदी पर एक पुल बनाना चाहते थे.

पुल पर काम शुरू करने के लिए, उन्हें गहरी नदी घाटी के ऊपर एक डोर ले जाना जरूरी थी.

पतंग उड़ाकर घाटी को पार करना शायद उसका सबसे अच्छा तरीका था.

इसलिए उन्होंने एक पतंग प्रतियोगिता आयोजित करने की सोची.

पतंग को एक ओर से दूसरी ओर लाने वाला पहला व्यक्ति विजेता करार होगा.

जब होमन ने सुना कि वो पुल, दोनों देशों को एक-दूसरे से जोड़ेगा , तो उसने अपनी पतंग को "यूनियन" (जोड़) नाम देने का फैसला लिया.

वो चाहता था कि उसकी पतंग "यूनियन" ही नए पुल की शुरुआत करे.

होमन की माँ ने एक कपड़े में लपेटकर उसे रोटी और सूखा मांस दिया.

"मैं एक या दो दिनों में, कनाडा जा सकता हूं," होमन ने कहा.

"मैं "यूनियन" को तब तक उड़ाऊंगा जब तक मुझे सही सीध नहीं मिलती है."

"याद रखना," उसकी माँ ने कहा, "तुम्हारी पतंग के लिए मैंने अपने सबसे अच्छे रेशमी कपड़े से एक गज कपड़ा दिया है. मुझे उम्मीद है कि तुम्हारी पतंग पुल के निर्माण में मदद करेगी, जैसा तुम सोचते हो."

होमन ने नियाग्रा नदी के लिए अपनी सड़क यात्रा शुरु की.

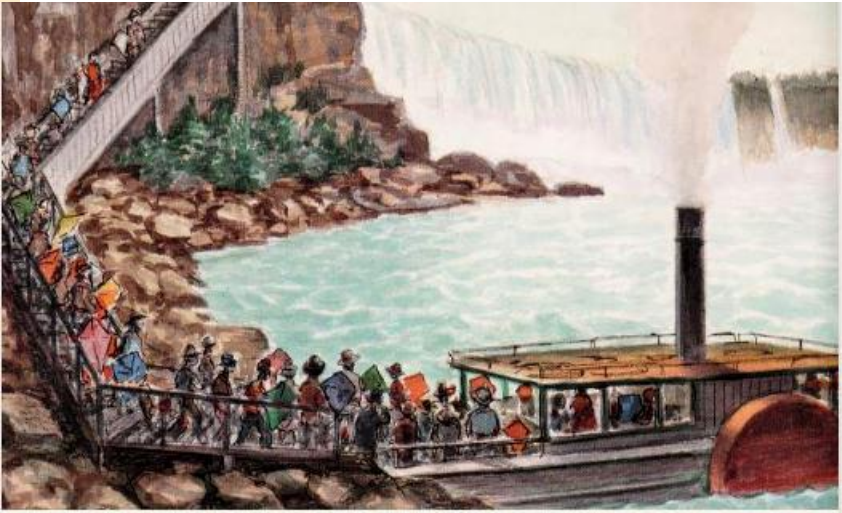

नियाग्रा फाल्स (झरने) की गर्जना इतनी तेज़ थी कि उसने बाकी सभी आवाज़ों को दबा दिया था.

पतंग उड़ाने वाले और जो लोग प्रतियोगिता देखना चाहते थे, वे एक नाव में सवार हुए.

नाव जल्द ही कनाडा के लिए रवाना हुई.

हवाएँ आमतौर पर अमरीका की दिशा से आती थीं, इसलिए पतंगों को कनाडा की ओर से उड़ाया जाना था.

होमन ने नाव पर अन्य पतंगों को देखा.

कुछ पतंगे "यूनियन" से बड़ी थीं.

लेकिन प्रतियोगिता जीतने के लिए बड़े आकार से कुछ अधिक चाहिए था.

पतंग कैसे उड़ाई जाए यह भी महत्वपूर्ण था.

आपको पतंग गिराने के सही समय का अंदाज़ होना भी ज़रूरी था.

होमन, मिस्टर थॉर्नटन के बगल में खड़ा था.

"तुम्हारे पास एक अच्छी पतंग है, होमन," मिस्टर थॉर्नटन झरने के शोर में चिल्लाए.

"ऐसा लगता है कि तुम्हारे पास इंग्लैंड तक उड़ान भरने लायक डोरी है. मुझे वो पुल जरूर चाहिए ताकि मैं कनाडा से अपनी आटा-चक्की के लिए और गेहूं खरीद सकूं. अगर तुम जीत गए, तो मैं तुम्हें अपनी ओर से इनाम में, पांच डॉलर और जोड़ दूंगा."

"दस डॉलर!" होमन ने आश्चर्य से कहा.

"धन्यवाद, मिस्टर थॉर्नटन," उसने कहा.

"मैं अपनी पूरी कोशिश करूंगा."

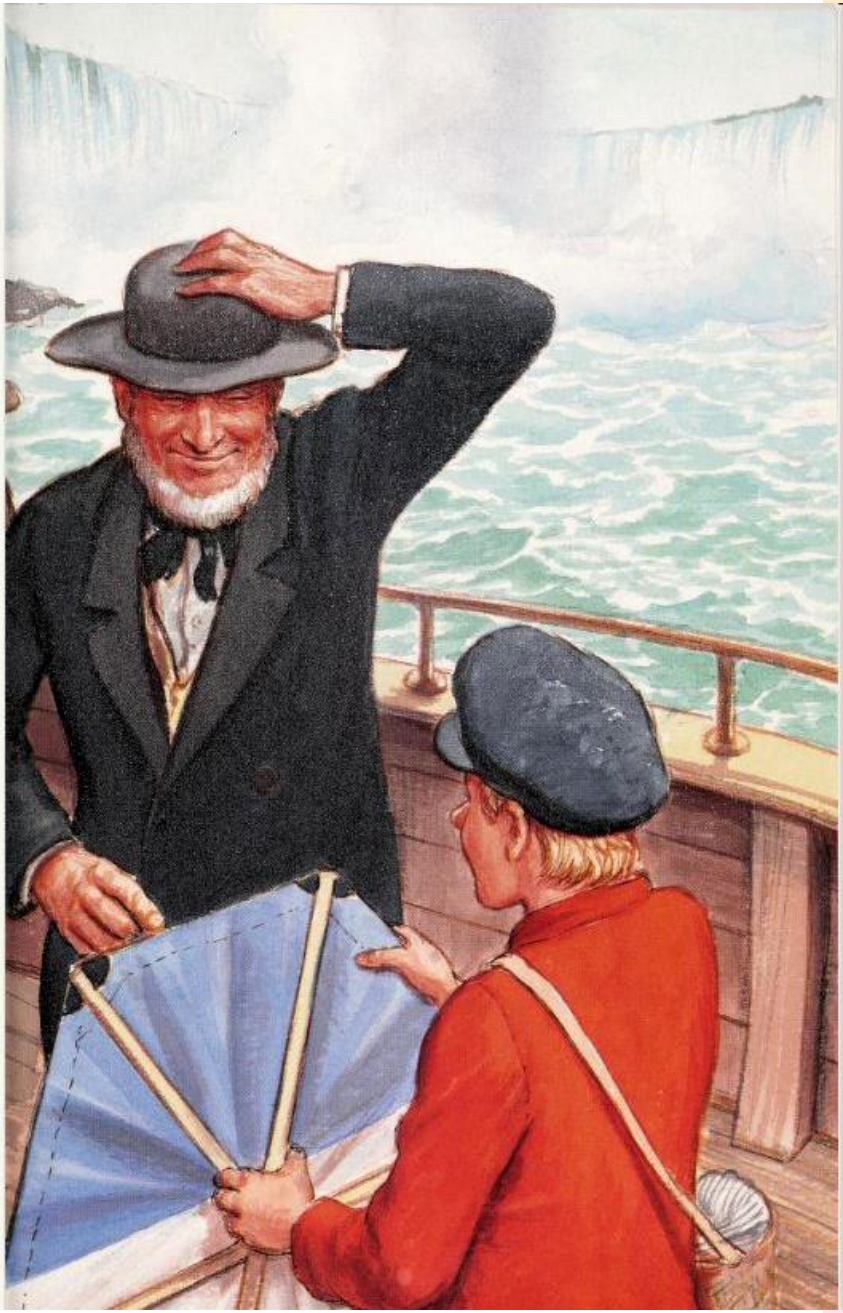

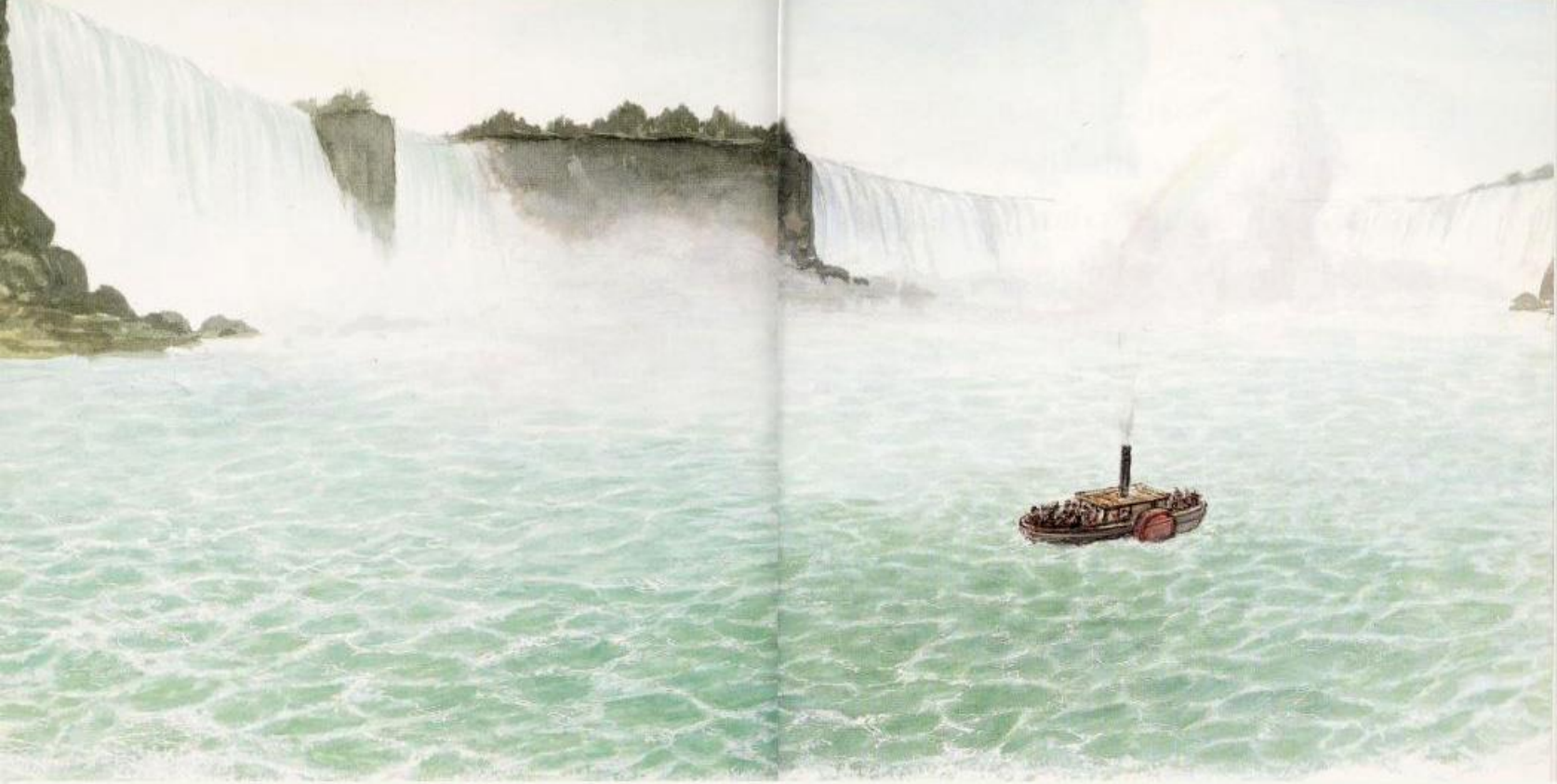

नाव झरने के तल के पास से गुजरी.

ठन्डे पानी की फुहार ने होमन के चेहरे पर छींटे मारे.

उसने अपनी सूखी जैकेट से "यूनियन" को ढक दिया.

होमन ने नदी के दोनों किनारों पर ऊंची-ऊंची चट्टानों को देखा.

उसने पानी के ऊपर हवा में लटके एक पुल की कल्पना करने की कोशिश की.

जल्द ही नाव कनाडा, के किनारे पर पहुँच गई.

अन्य पतंग उड़ाने वालों के साथ-साथ होमन भी चट्टानों के ऊपर चढ़ा.

उन्हें दो मील पैदल चलकर उस स्थान तक पहुंचना था जहां पुल बनाया जाएगा.

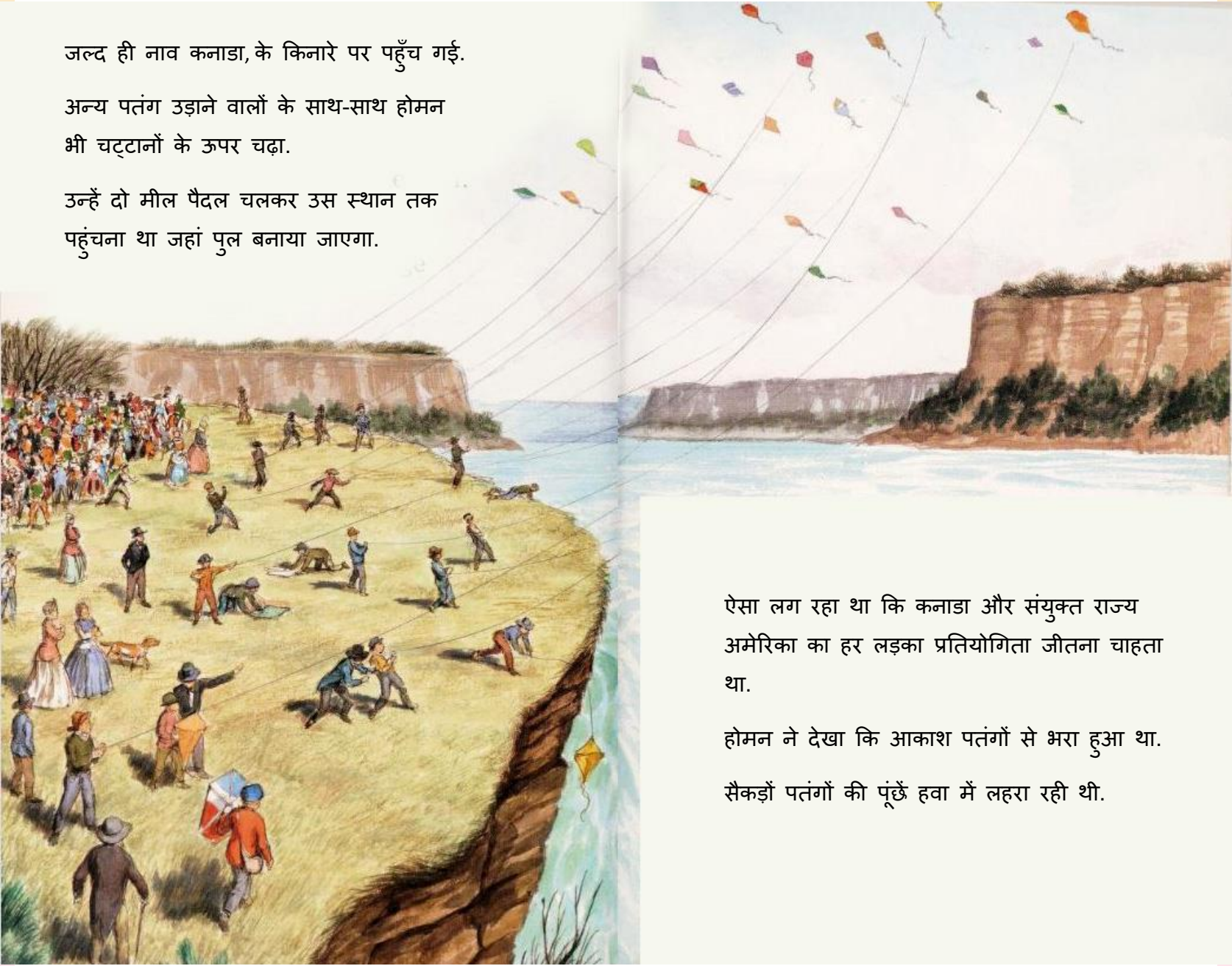

ऐसा लग रहा था कि कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका का हर लड़का प्रतियोगिता जीतना चाहता था.

होमन ने देखा कि आकाश पतंगों से भरा हुआ था.

सैकड़ों पतंगों की पूंछें हवा में लहरा रही थी.

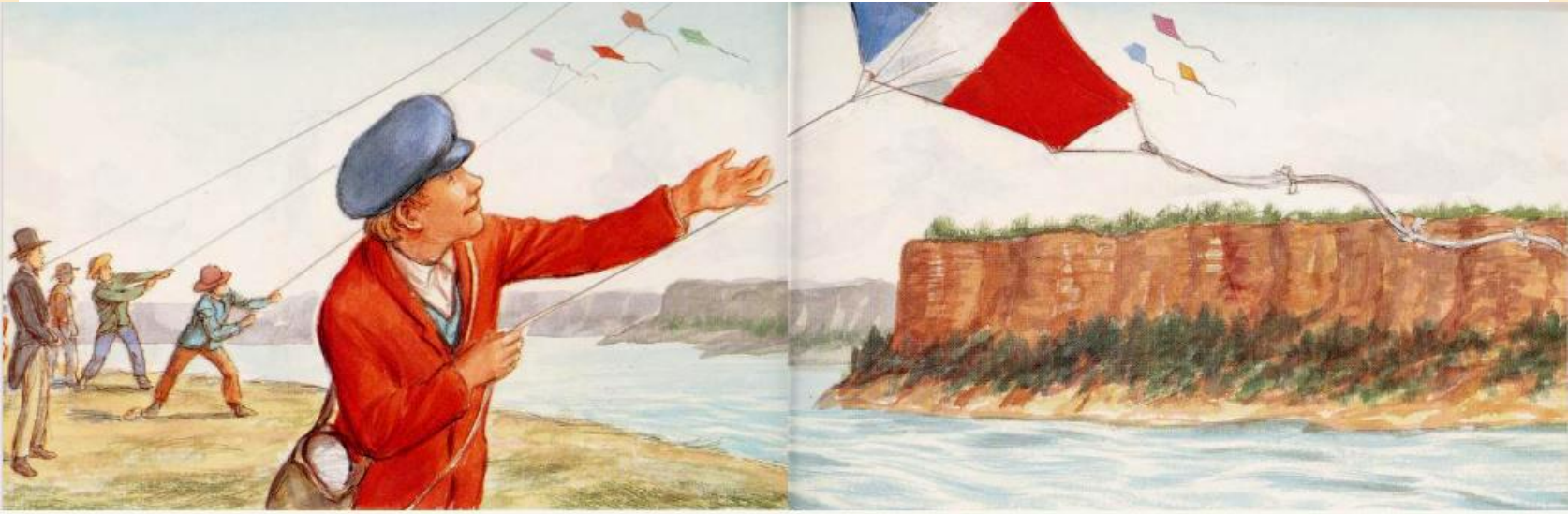

होमन ने एक गहरी सांस ली.

फिर उसने "यूनियन" को हवा में उछाल दिया.

पतंग ने ज़मीन की ओर डुबकी लगाई, और फिर होमन ने डोर खींची.

उसने फिर से डोर में ढील दी.

इस बार हवा ने उसकी पतंग को उड़ाया और थाम लिया.

उसके बाद वो डोर को और ढील देता गया.

होमन ने अपनी योजना के बारे में सोचा.

वो अपनी पतंग "यूनियन" को अन्य पतंगों की तुलना में ऊंचा उड़ाएगा.

तब ही उसकी पतंग ऊंची हवाओं को पकड़ सकती थी और नदी के उस पार जा सकती थी.

यदि होमन पतंग को नीचे उड़ाता, तो वो चट्टानों से टकरा सकती थी.

अगर वो पतंग को बहुत नीचे उड़ाता, तो वो पानी में जाकर गिर सकती थी.

हवाओं के थमने तक उसे "यूनियन" को हवा में रखना पड़ा.

तब वो अपनी पतंग को सुरक्षित नीचे ला सकता था.

होमन और "यूनियन" को देखने के लिए लोगों की एक छोटी भीड़ इकठ्ठा हुई.

पतंग ऊपर-नीचे नाचती रही.

होमन को इतना समझ में आया कि उस समय तेज़ हवा स्थिर नहीं थीं.

उसने पतंग को नीचे लाने से पहले हवा के बदलने का इंतजार करने का फैसला किया.

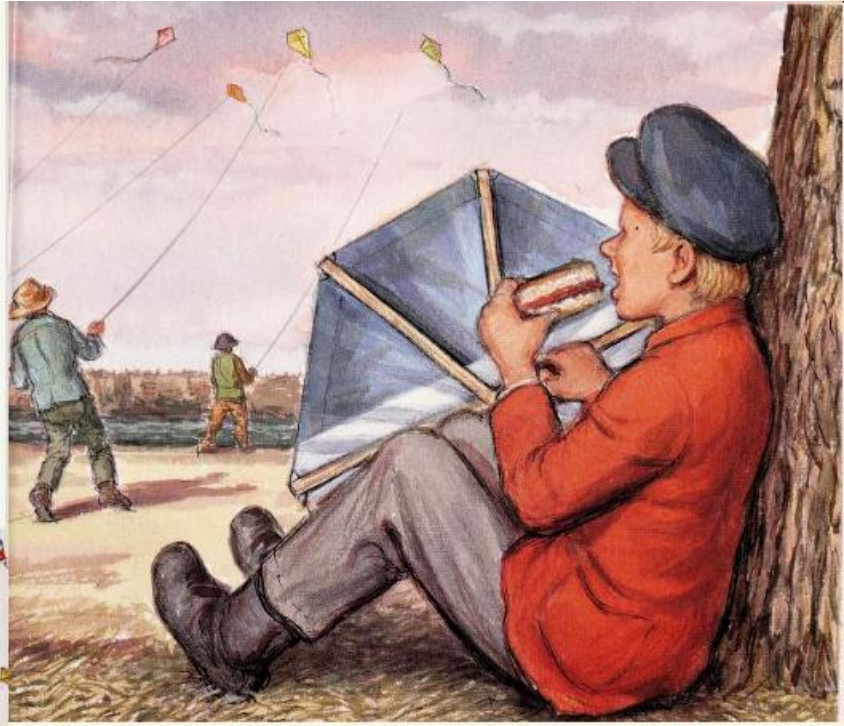

दो घंटे बाद, सूर्यास्त से ठीक पहले, होमन ने चार अन्य पतंगों को नदी के ऊपर उड़ते हुए देखा.

ऐसा लग रहा था कि उनमें से एक दूसरी तरफ पहुंच सकती थी.

पर वो किसी अन्य पतंग को जीतने नहीं दे सकता था.

होमन ने बहुत सोचा, फिर उसने एक फैसला लिया.

उसका फैसला जोखिम भरा था,

लेकिन उसे वो मौका लेना पड़ा.

उसने "यूनियन" को फिर से ऊंचा उठाया.

उसकी पतंग हवा में ऊंची और ऊंची उठ गई.

जल्द ही अंधेरा हो गया.

होमन अब अपनी पतंग को देख नहीं सकता था.

हवा, नम और ठंडी हो गई थी.

होमन ने अपनी जैकेट को कसकर अपने चारों ओर खींचा.

अभी तक किसी की पतंग उस पार नहीं पहुंची थी, और अब भी कई पतंगें उड़ रही थीं.

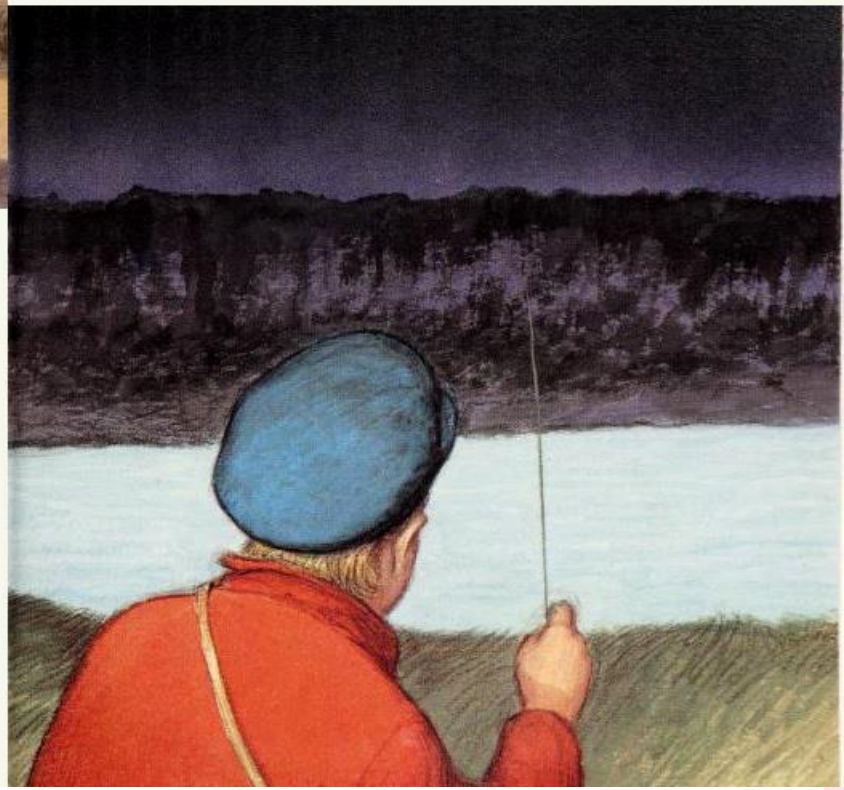

"तुमने हार नहीं मानी है, क्यों है ना?" लालटेन पकड़े हुए एक आदमी ने कहा.

"आखिरी नाव बहुत पहले ही चली गई है," उस आदमी ने कहा, "और तुम्हें आज रात सोने के लिए एक जगह की ज़रुरत होगी. मेरा जेम्स बार्टन नाम है. तुम मेरे घर में आराम से रह सकते हो."

"धन्यवाद," होमन ने उत्तर दिया.

हवाएं "यूनियन" को पानी की ओर खींच रही थीं.

पतंग घाटी में गिर सकती थी.

होमन कोशिश करते रहना चाहता था, लेकिन वो अब पतंग को पकड़े हुए बहुत थक गया था.

उसने "यूनियन" को ज़मीन पर उतारा और फिर मिस्टर बार्टन के साथ उनके घर चला गया.

मिस्टर बार्टन एक संकरे रास्ते से होकर गए.

जैसे ही वे घर पहुंचे, मिसेज़ बार्टन उन्हें झट से अंदर ले गईं.

मेज पर डबलरोटी और सूप के कटोरे रखे थे.

होमन ने पेट भरकर खाया और फिर वो सो गया.

अगले दिन, होमन ने बार्टन दंपत्ति को धन्यवाद दिया.

फिर वो वापस चट्टान पर चला गया.

"हम तुम्हारी पतंग पर नज़र रखेंगे," मिस्टर बार्टन ने कहा.

"यूनियन" हवा में उड़ने वाली पहली पतंग थी.

दोपहर तक, वहाँ पर एक दर्जन और पतंगे थीं.

दक्षिण-पश्चिम की हवा स्थिर थी.

होमन ने खूब सारी डोर छोड़ी.

अंत में, "यूनियन" नदी के दूसरी तरफ उड़ रही थी.

होमन पूरे दिन अपनी पतंग उड़ाता रहा.

अन्य पतंगें कभी-कभी उसकी पतंग के पास आईं.

होमन ने पुरस्कार के बारे में भी सोचा.

उसने मिस्टर थॉर्नटन के अतिरिक्त पांच डॉलर के बारे में भी सोचा.

उनसे वो लगभग कुछ भी खरीद सकता था...
शायद अपने लिए एक घोड़ा भी.

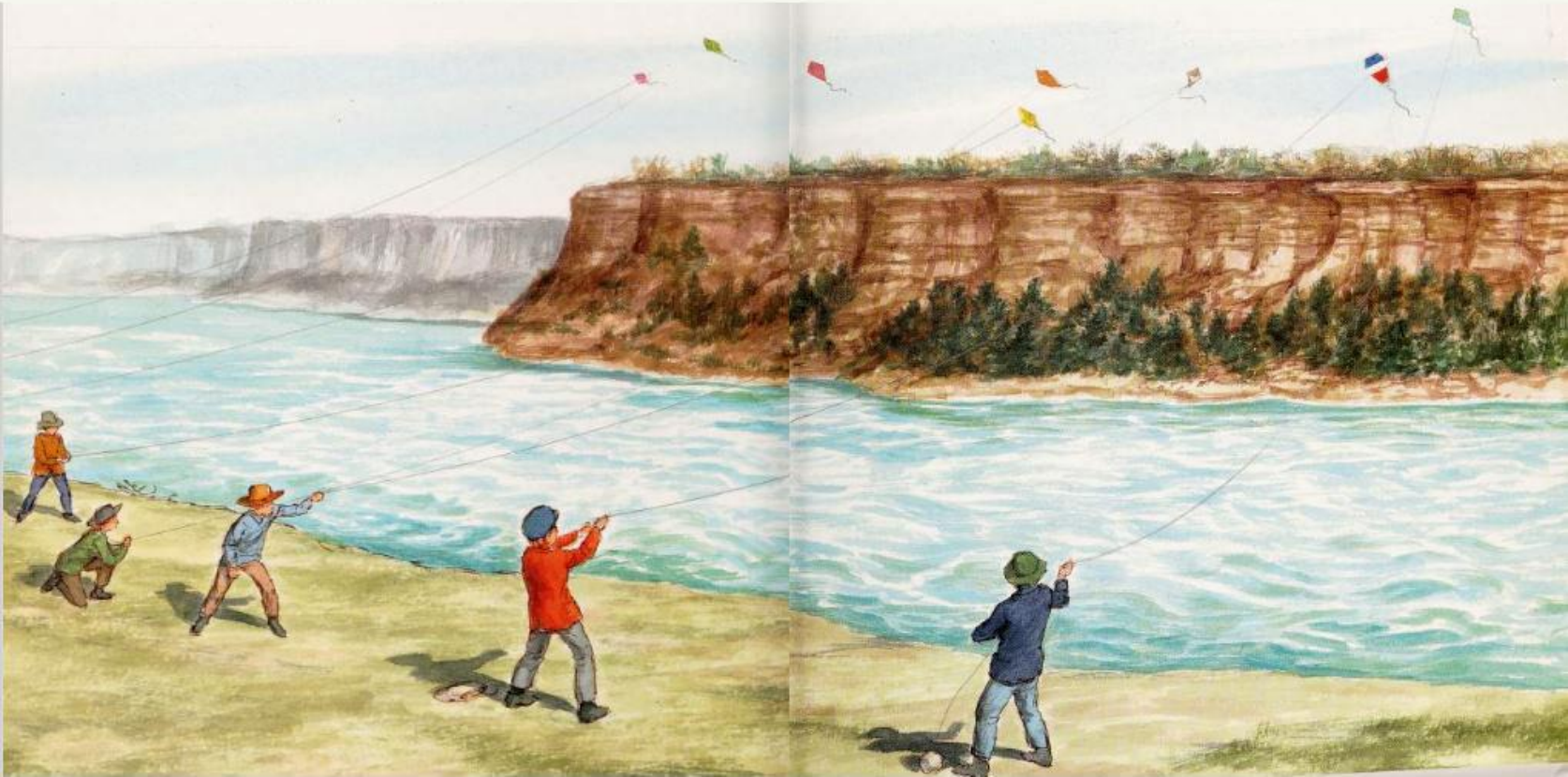

सूर्यास्त के समय, कुछ पतंगबाजों ने हार मान ली और वे अपने-अपने घर चले गए.

अधिकांश दर्शक भी घर चले गए.

फिर बर्फ के टुकड़े नदी में गिरने लगे.

होमन जानता था कि नदी का एक हिस्सा बर्फ में जम गया था.

अब बर्फ के टुकड़े-टुकड़े होने लगे थे.

मिस्टर बार्टन चट्टान पर आए.

"तुम्हारी पतंग दूसरी तरफ है, लेकिन वो नीचे नहीं आ रही है," उन्होंने कहा.

"तुम उस बर्फ पर अपना ध्यान रखना."

"कुछ देर में हवा थम जाएगी," होमन ने कहा, "मुझे बस इंतज़ार करना होगा."

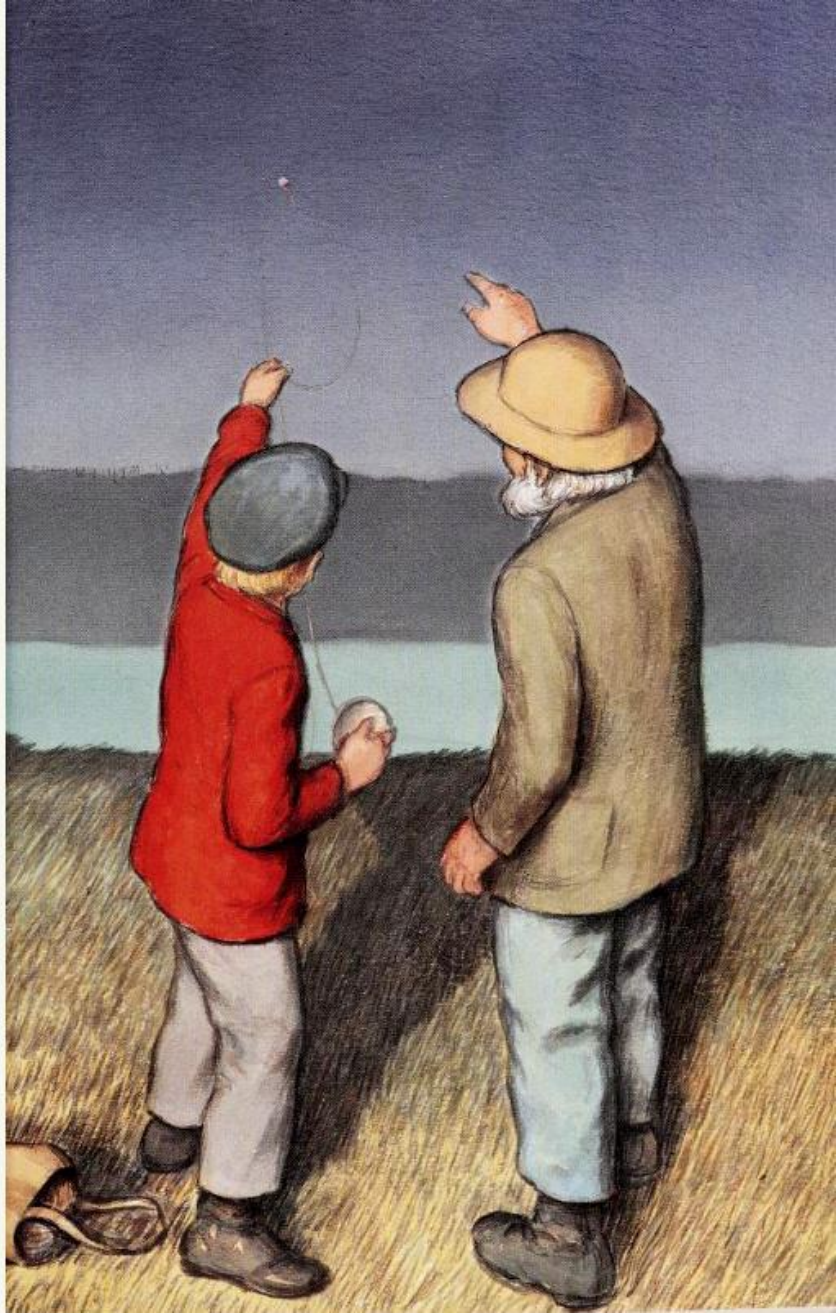

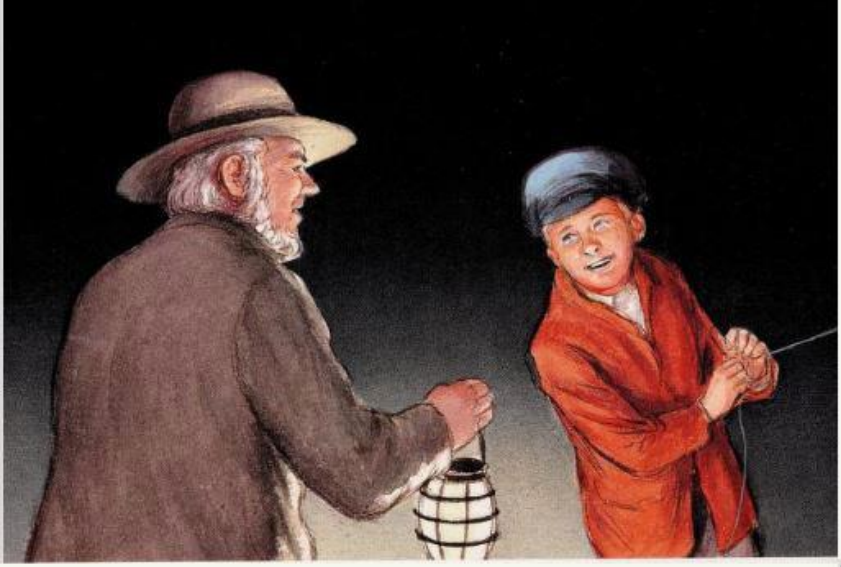

आधी रात को, होमन ने डोरी पर खिंचाव महसूस किया.

"मेरी पतंग नीचे ज़मीन पर है!" वो चिल्लाया.

वो नदी के दूसरी ओर से एक संकेत या सिगनल का इंतजार कर रहा था.

लेकिन कुछ नहीं हुआ.

अचानक उसे डोरी ढीली महसूस हुई.

"मुझे नहीं लगता है कि दूसरी तरफ किसी ने पतंग को पकड़ कर रखा होगा," होमन ने कहा.

मिस्टर बार्टन ने डोर को खींचा.

"यह तुम्हारा दुर्भाग्य है, बेटा," उन्होंने कहा.

"तुम्हारी डोर कहीं बर्फ में फंस गई होगी."

होमन ने टूटी हुई डोर को खींच लिया.

उसके अंत में कोई पतंग नहीं थी.

उसकी "यूनियन" पतंग हार गई थी!

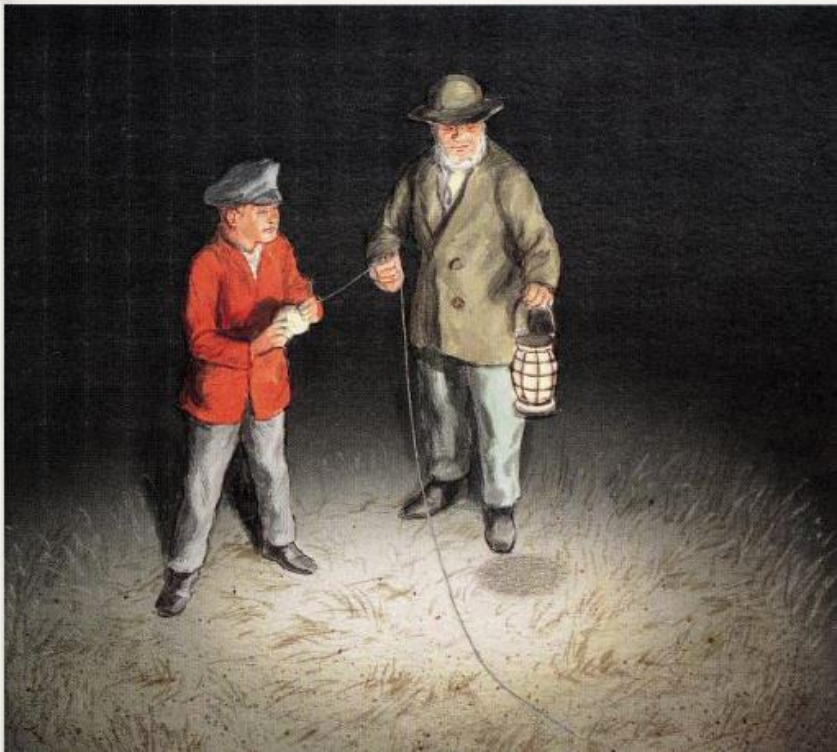

अगले आठ दिनों तक बर्फ के टुकड़े नदी में गिरते रहे.

कोई भी नाव नदी को पार नहीं कर सकती थी.

होमन, बार्टन्स परिवार के साथ ही रहा.

"यूनियन" को देखने की उम्मीद में वो हर दिन चट्टान के किनारे चलता था.

लेकिन वहाँ उसे सिर्फ दूसरी पतंगों के टुकड़े ही मिले.

अब वह प्रतियोगिता कैसे जीतेगा?

जब आखिर में बर्फ ख़त्म हुई, तो होमन पहली नाव लेकर घर वापिस गया.

घर आने पर उसकी मां ने उसे गले से लगाया.

" "यूनियन" पुरस्कार जीतने के बहुत करीब आई थी," उसने कहा.

"मिस्टर थॉर्नटन को तुम्हारी पतंग अमेरिकी की ज़मीन पर मिली."

माँ ने होमन को "यूनियन" पतंग सौंप दी.

होमन ने उसे गौर से देखा.

उसका फ्रेम दो जगह पर टूटा हुआ था.

उसका एक हिस्सा गायब था.

और उसे एक नई पूंछ की जरूरत थी.

होमन को पक्का पता नहीं था कि वो उसे ठीक कर पाएगा.

लेकिन वो यह जानता था कि उसे कोशिश करनी होगी.

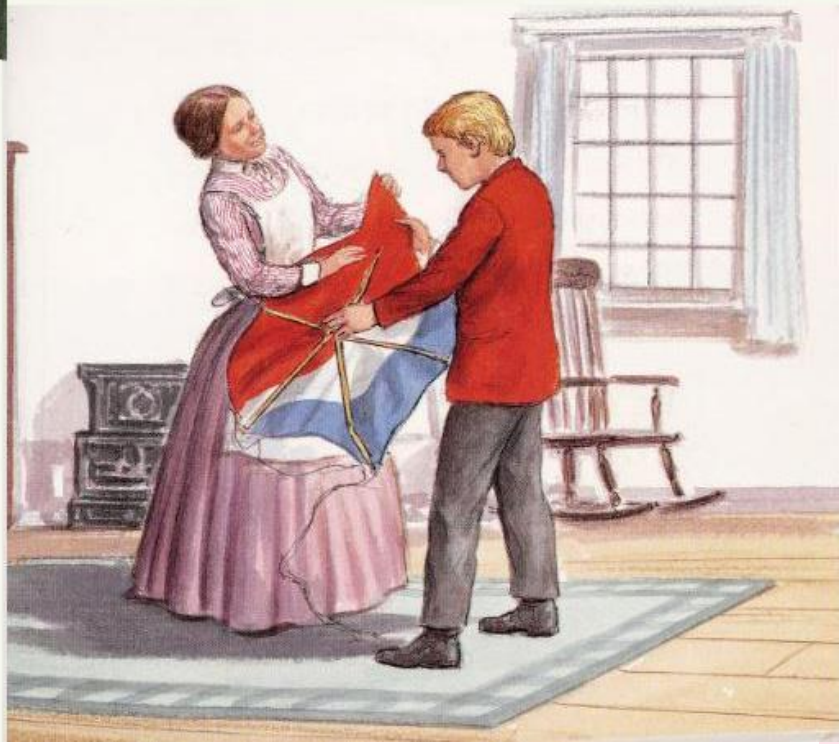

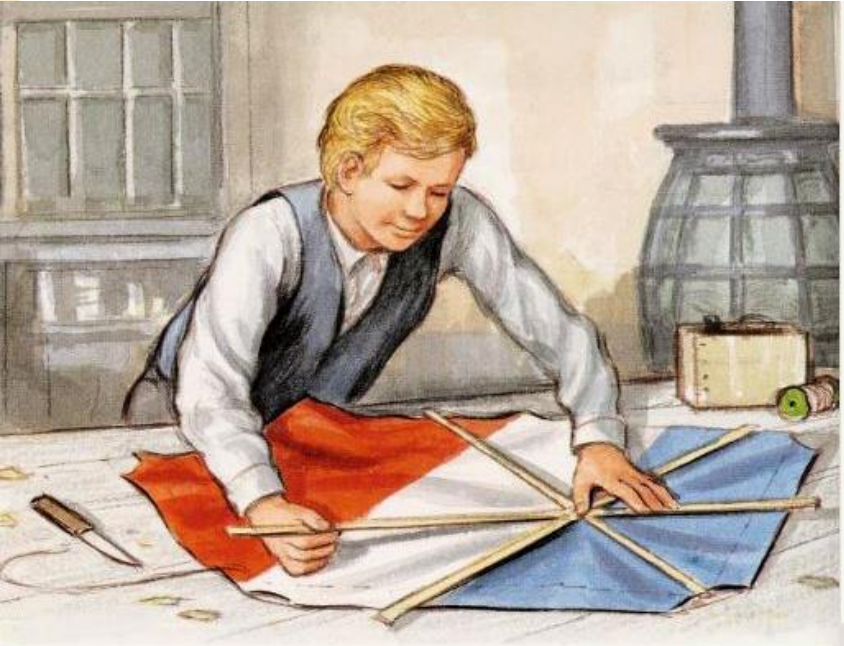

होमन तुरंत काम करने पर लग गया.

पहले उसने लकड़ी के नए टुकड़े काटे.

फिर उसने सावधानी से उन्हें रेशमी कपड़े से जोड़ दिया.

फ्रेम को ठीक से सेट किया जाना था.

होमन ने कई बार पतंग की परीक्षा ली.

प्रत्येक उड़ान के बाद, उन्होंने लाइनों और फ्रेम में कुछ-कुछ बदल की.

"यूनियन" को तैयार होने में तीन दिन लगे.

होमन नाव से दुबारा वापस कनाडा गया.

केवल तीन अन्य लड़के अभी भी प्रतियोगिता में थे.

होमन ने "यूनियन" को हवा में फेंका.

फिर इंच-दर-इंच करके उसने डोर को ढील दी.

हवा ने जल्द ही पतंग को नदी के उस पार धकेल दिया.

तीन अन्य पतंगों ने "यूनियन" के करीब उड़ान भरी.

दिन के अंत तक, दो पतंगें नीचे उतर आयीं थीं.

एक पानी में गिर गई थी.

दूसरी एक चट्टान के किनारे से टकरा गई थी.

तीसरी पतंग "यूनियन" से बड़ी थी.

वो होमन की पतंग से बहुत ऊपर उड़ रही थी.

थोड़ी देर बाद, रोमन के हाथ तंग और ठंडे हो गए.

लेकिन वो मजबूती से डटा रहा.

एक-एक करके उसने अपनी उंगलियां खोलीं और बंद कीं.

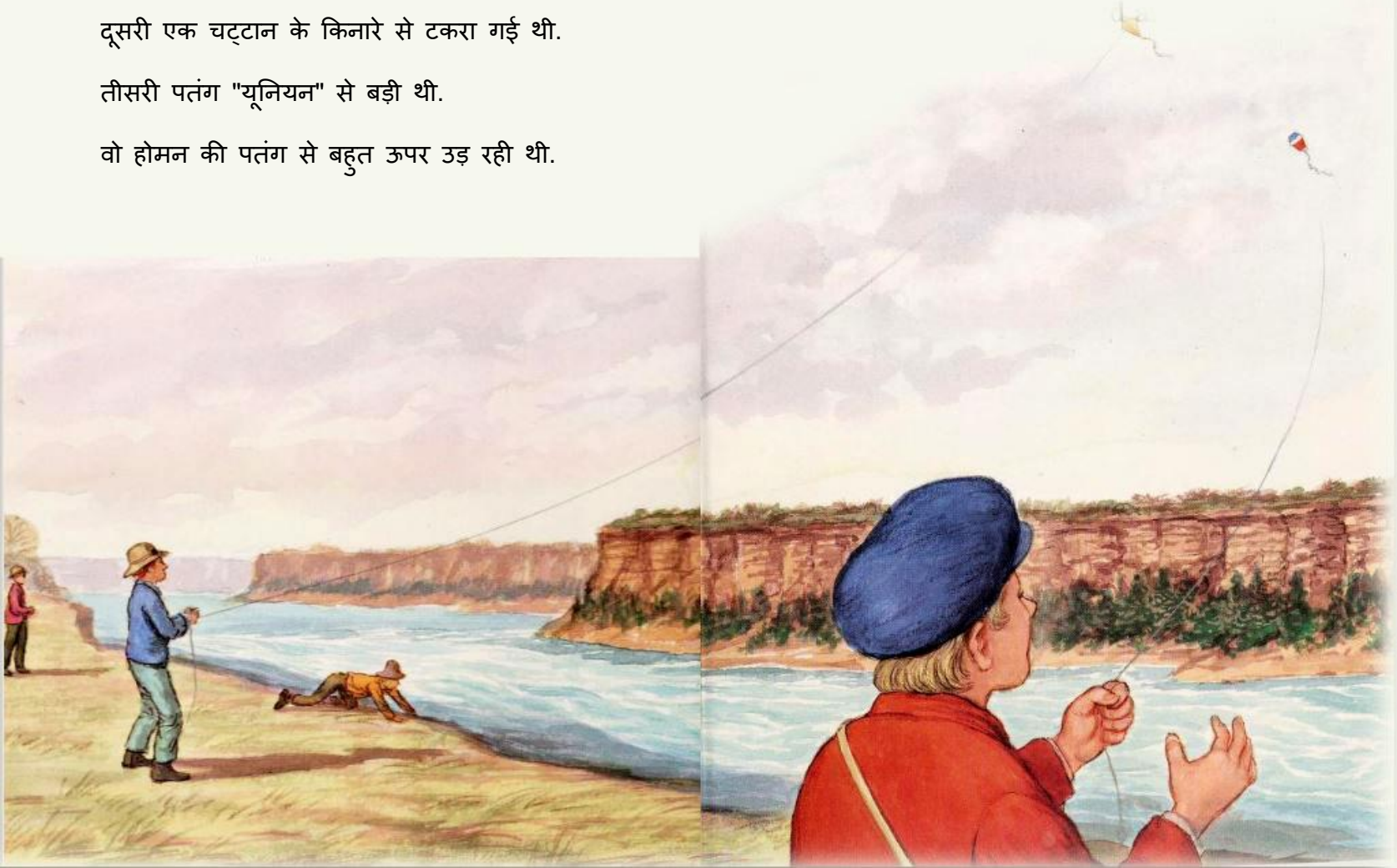

फिर दूसरे लड़के ने और ढील दी.

उसकी पतंग पानी से बहुत दूर उड़ गई.

इससे पहले कि होमन "यूनियन" को गिरा सके,

दूसरे लड़के की पतंग सुरक्षित रूप से उतर सकती थी.

लेकिन तभी दूसरी पतंग की डोरी टूट गई.

होमन ने दूसरी पतंग को गायब होते हुए देखा.

अब पूरी प्रतियोगिता होमन पर ही निर्भर थी.

कई किसान उसकी जय-जयकार करने पहुंचे थे.

शाम शुरु होते ही, मिस्टर बार्टन वहां भागे-भागे पहुंचे.

"मिसेज़ बार्टन और मैं पूरे दिन "यूनियन" को देख रहे थे," उन्होंने कहा.

उन्होंने होमन को एक कप गर्म सूप दिया.

होमन ने डोरी से बिना हाथ हटाए सूप पिया.

ऐसा लग रहा था जैसे अब हवाएं थम रही थीं.

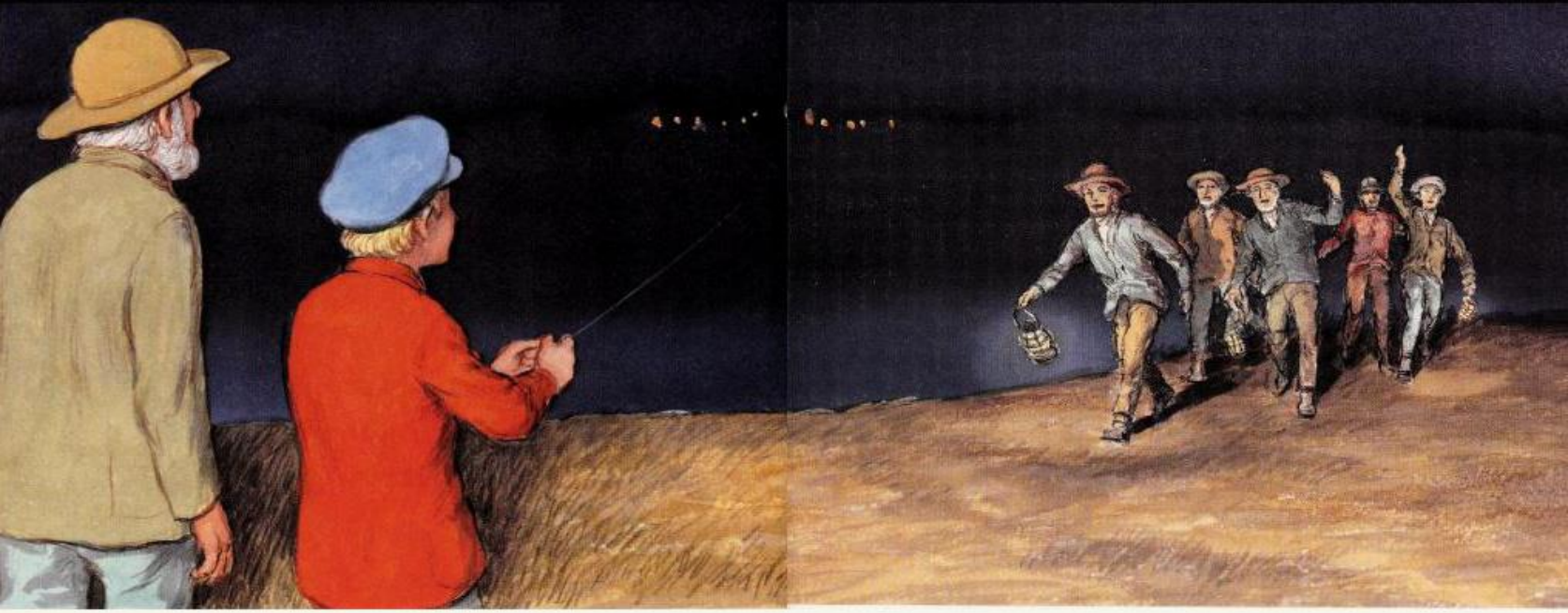

होमन ने सोचा कि वो डोरी को गिरते हुए महसूस कर रहा था.

फिर उसे उसका पक्का यकीन हुआ.

पतंग पहली बार जैसे ही गिर रही थी.

लेकिन इस बार, होमन ने एक लालटेन को अमेरिकी ओर से लहराते हुए देखा.

वो एक अलाव की लपटों को भी देख पाया.

इन संकेतों का मतलब था कि किसी ने प्रतियोगिता ज़रूर जीती थी.

एक किसान चिल्लाया,

"आगे का काम हम करेंगे, होमन. तुम्हारा काम अब ख़त्म हो गया है."

किसी ने पतंग की डोर बांध दी.

डोर का एक छोर कनाडा में था और दूसरा संयुक्त राज्य अमेरिका में!

होमन की पतंग की डोर दोनों देशों के बीच में एक पुल बनाने में मदद करेगी.

सब लोग बातें कर रहे थे और होमन की पीठ थपथपा रहे थे.

होमन चिल्लाना और भागना चाहता था, लेकिन वो हिलने-डुलने की हालत में नहीं था.

मिस्टर बार्टन ने होमन को अपने कंधों पर उठा लिया.

शोर-शराबे वाली भीड़ उनके पीछे-पीछे एक उत्सव मनाने के लिए बार्टन फार्म तक गई.

मिसेज़ बार्टन ने सिर्फ होमन के लिए विशेष मकई के केक बनाए थे.

अगले दिन, होमन नाव से वापस घर गया.

अब हर कोई होमन से हाथ मिलाना चाहता था.

जब वो अमेरिकी ज़मीन पर पहुंचा, तो होमन ने मिस्टर थॉर्नटन को देखा.

उन्होंने होमन को उसकी पतंग के साथ पाँच चाँदी के डॉलर दिए.

होमन मुस्कुराया.

वो जानता था कि हर बार जब वो नया पुल पार करेगा, तो वह अपनी पतंग "यूनियन" के बारे में सोचेगा.

अंत के शब्द

यह कहानी वास्तविक घटनाओं पर आधारित है. 1840 के दशक में, कनाडा और लाइट संयुक्त राज्य अमेरिका में लोग नियाग्रा नदी पर एक पुल बनाना चाहते थे. 23 अगस्त, 1846 को नियाग्रा फॉल्स इंटरनेशनल ब्रिज कंपनी का गठन किया गया था. चार्ल्स एलेट जूनियर नाम के एक युवा इंजीनियर को पुल के डिजाइन और निर्माण के लिए चुना गया था.

वो एक "सस्पेंशन" पुल होगा, इसलिए पुल सिर्फ टावरों से जुड़े केबलों से लटका होगा. लेकिन पुल बनने से पहले, एलेट को कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच पहली कड़ी बनाने का रास्ता खोजना था. उसके लिए किसी ने पतंगबाजी प्रतियोगिता आयोजित करने का सुझाव दिया.

1847 में होमन द्वारा प्रतियोगिता जीतने के एक दिन बाद, एक रस्सी को पतंग की डोर से जोड़ा गया और नदी के उस पार खींचा गया. बाद में उस रस्सी का उपयोग नदी के उस पार लोहे की केबल खींचने के लिए किया गया. फिर केबल को ठोस चट्टान से बांध दिया गया. नदी के दोनों किनारों पर टावर बनने के बाद, केबल को टावरों से जोड़ा गया.

उसके बाद, बिल्डरों को लोगों और सामान की सप्लाई को नदी के एक तरफ से दूसरी ओर ले जाने के लिए किसी यातायात की जरूरत थी. उन्होंने दो लोगों के बैठने के लिए और कुछ सामान रखने के लिए एक लोहे की टोकरी बनाई. वो टोकरी एक केबल से लटकी हुई थी और उसे एक तरफ से दूसरी तरफ खींचा जा सकता था.

नियाग्रा फॉल्स सस्पेंशन ब्रिज 1 अगस्त, 1848 को खोला गया. नियाग्रा फॉल्स के पास आज, छह पुल, संयुक्त राज्य अमरीका और कनाडा को आपस में जोड़ते हैं. ट्रेन, कार और ट्रक एक देश से दूसरे देश में तेजी से जाते हैं. होमन वॉल्श को आज भी दो देशों के बीच पहली कड़ी बनाने वाले व्यक्ति के रूप में याद किया जाता है.